International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 15 Issue 1 || January 2026 || PP. 137-143

मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिक जीवन-बोध और पारिवारिक विघटन

डॉ० अशोक कुमार शर्मा
आचार्य हिंदी
राजकीय महाविद्यालय गंगापुर सिटी (राज०)

सारांश

आधुनिक हिंदी नाटक के विकास में मोहन राकेश का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वे हिंदी के उन प्रमुख नाटककारों में गिने जाते हैं जिन्होंने आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मानवीय संबंधों की विडंबनाओं और पारिवारिक विघटन की समस्याओं को अपने नाटकों के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनके नाटकों में आधुनिक मनुष्य की मानसिक संघर्षपूर्ण स्थिति, अस्तित्वगत संकट तथा बदलती सामाजिक संरचना का यथार्थ चित्रण मिलता है। इस दृष्टि से मोहन राकेश का नाट्य साहित्य आधुनिक जीवन-बोध की गहरी अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। मोहन राकेश के प्रमुख नाटक— आषाढ़ का एक दिन, आधे-अधूरे और लेहरों के राजहंस— आधुनिक जीवन की समस्याओं और पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं को उजागर करते हैं। विशेष रूप से आधे-अधूरे में मध्यवर्गीय परिवार के भीतर उत्पन्न तनाव, असंतोष और विघटन का अत्यंत यथार्थ चित्रण मिलता है। इन नाटकों के पात्र अपने जीवन में पूर्णता की तलाश करते हुए भी असंतोष और अकेलेपन की स्थिति का अनुभव करते हैं। यही स्थिति आधुनिक जीवन-बोध की एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में सामने आती है। मोहन राकेश के नाटकों में पारिवारिक संबंधों की टूटन, पति-पत्नी के बीच तनाव, पीढ़ियों के बीच दूरी और व्यक्तिवादी मानसिकता के कारण उत्पन्न अकेलापन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस प्रकार उनके नाटक आधुनिक समाज की उन समस्याओं को सामने लाते हैं जो बदलते सामाजिक मूल्यों और जीवन-शैली के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिक जीवन-बोध तथा पारिवारिक विघटन के स्वरूप का विश्लेषण करना है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि मोहन राकेश ने अपने नाटकों के माध्यम से आधुनिक मनुष्य के मानसिक संघर्ष, सामाजिक परिवर्तनों और पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं को किस प्रकार अभिव्यक्त किया।

मुख्य शब्दः *मोहन राकेश, हिंदी नाटक, आधुनिक जीवन-बोध, पारिवारिक विघटन, आधे-अधूरे, आषाढ़ का एक दिन*

1. प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी नाटक के विकास में मोहन राकेश का विशेष योगदान माना जाता है। वे उन नाटककारों में से हैं जिन्होंने हिंदी नाट्य साहित्य को पारंपरिक विषयों और आदर्शवादी दृष्टिकोण से बाहर निकालकर आधुनिक जीवन की वास्तविकताओं से जोड़ा। उनके नाटकों में आधुनिक मनुष्य की मानसिक स्थिति, सामाजिक परिवर्तनों से उत्पन्न तनाव और पारिवारिक संबंधों में उत्पन्न जटिलताओं का अत्यंत यथार्थ चित्रण मिलता है। इस दृष्टि से मोहन राकेश का नाट्य साहित्य आधुनिक जीवन-बोध की सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में सामने आता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में तीव्र सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए। औद्योगीकरण, शहरीकरण और बदलते सामाजिक मूल्यों के कारण पारिवारिक संरचना और मानवीय संबंधों में भी परिवर्तन आया। संयुक्त परिवार की परंपरा धीरे-धीरे कमजोर होने लगी और व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ प्रबल होने लगीं। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप पारिवारिक संबंधों में तनाव, असंतोष और विघटन की स्थिति उत्पन्न हुई। मोहन राकेश ने अपने नाटकों के माध्यम से इसी परिवर्तित सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति दी है। मोहन राकेश के प्रमुख नाटक— *आषाढ़ का एक दिन, आधे-अधूरे* और *लेहरों के राजहंस*—आधुनिक जीवन की जटिलताओं और मानवीय संबंधों की विडंबनाओं को उजागर करते हैं। इन नाटकों में पात्र अपने जीवन में पूर्णता और संतोष की खोज करते हैं, किंतु परिस्थितियों, सामाजिक दबावों और व्यक्तिगत सीमाओं के कारण वे निरंतर संघर्ष और असंतोष की स्थिति का अनुभव करते हैं। यही संघर्ष आधुनिक जीवन-बोध की एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में सामने आता है। विशेष रूप से *आधे-अधूरे* नाटक में मध्यवर्गीय परिवार के भीतर उत्पन्न विघटन, पति-पत्नी के बीच तनाव और पारिवारिक संबंधों की टूटन का अत्यंत

प्रभावशाली चित्रण मिलता है। यह नाटक आधुनिक जीवन की उस स्थिति को प्रस्तुत करता है जिसमें व्यक्ति संबंधों के भीतर रहते हुए भी अकेलापन और असंतोष अनुभव करता है। इस संदर्भ में मोहन राकेश के नाटकों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य उनके नाटकों में आधुनिक जीवन-बोध तथा पारिवारिक विघटन की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि मोहन राकेश ने अपने नाट्य साहित्य के माध्यम से आधुनिक समाज की समस्याओं और मानवीय संबंधों की जटिलताओं को किस प्रकार अभिव्यक्त किया।

2. मोहन राकेश और आधुनिक हिंदी नाटक की पृष्ठभूमि

बीसवीं शताब्दी के मध्य में हिंदी नाटक एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। प्रारंभिक हिंदी नाटकों में जहाँ ऐतिहासिक और पौराणिक विषयों की प्रधानता थी, वहीं धीरे-धीरे नाटककारों ने समकालीन सामाजिक यथार्थ की ओर ध्यान देना प्रारंभ किया। इसी परिवर्तनशील परिदृश्य में मोहन राकेश का नाट्य साहित्य सामने आया, जिसने हिंदी नाटक को एक नई संवेदनात्मक और वैचारिक दिशा प्रदान की। मोहन राकेश का महत्व इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने नाटक को केवल कथानक-प्रधान विधा के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे मानवीय अनुभवों और मनोवैज्ञानिक जटिलताओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। उनके नाटकों में बाहरी घटनाओं की अपेक्षा पात्रों के आंतरिक संघर्ष और मानसिक द्वंद्व अधिक महत्वपूर्ण दिखाई देते हैं। इस दृष्टि से उनका नाट्य साहित्य आधुनिक जीवन की जटिलताओं और अस्तित्वगत प्रश्नों को समझने का एक सशक्त माध्यम बन जाता है।

आषाढ़ का एक दिन में रचनात्मक व्यक्तित्व और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संघर्ष का चित्रण मिलता है। कालिदास और मल्लिका के संबंधों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि व्यक्तिगत आकांक्षाएँ और सामाजिक परिस्थितियाँ किस प्रकार मनुष्य के जीवन को प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार *लेहरों के राजहंस* में वैराग्य और सांसारिक जीवन के बीच उत्पन्न द्वंद्व को अत्यंत सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। मोहन राकेश का नाट्य साहित्य इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने पात्रों को आदर्शवादी या एकांगी रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उन्हें जटिल और यथार्थपरक रूप में चित्रित किया। उनके पात्र पूर्ण या आदर्श नहीं हैं, बल्कि वे अपनी कमजोरियों, इच्छाओं और असफलताओं के साथ सामने आते हैं। यही विशेषता उनके नाटकों को आधुनिक जीवन की वास्तविकताओं से जोड़ती है। इस प्रकार मोहन राकेश ने हिंदी नाटक को केवल विषयवस्तु की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि संरचना और दृष्टिकोण की दृष्टि से भी आधुनिक बनाया। उनके नाटक आधुनिक समाज में मनुष्य के अनुभवों, संबंधों और संघर्षों की गहरी पड़ताल प्रस्तुत करते हैं, जो उन्हें हिंदी नाट्य साहित्य में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

3. मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिक जीवन-बोध

मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिक जीवन-बोध का स्वर अत्यंत गहराई और संवेदनात्मक तीव्रता के साथ व्यक्त हुआ है। उनके नाटकों का केंद्रीय विषय आधुनिक मनुष्य की आंतरिक स्थिति, उसके मानसिक संघर्ष और जीवन में उत्पन्न असंतोष की अनुभूति है। आधुनिकता के प्रभाव में मनुष्य की जीवन-दृष्टि, सामाजिक संबंध और मूल्य-बोध जिस प्रकार परिवर्तित हुए हैं, मोहन राकेश ने उन्हें अपने नाटकों में सूक्ष्मता और यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है। आधुनिक जीवन-बोध का एक प्रमुख पक्ष मनुष्य के भीतर उत्पन्न अकेलेपन और असंतोष की भावना है। मोहन राकेश के नाटकों के पात्र बाहरी रूप से सामाजिक जीवन का हिस्सा होते हुए भी भीतर से गहरे स्तर पर अकेले और असंतुष्ट दिखाई देते हैं। यह स्थिति आधुनिक जीवन की उस विडंबना को व्यक्त करती है जिसमें व्यक्ति संबंधों और सामाजिक संरचनाओं के बीच रहते हुए भी आत्मिक संतोष प्राप्त नहीं कर पाता। *आषाढ़ का एक दिन* में कालिदास का चरित्र इस आधुनिक जीवन-बोध का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। कालिदास एक प्रतिभाशाली कवि होने के बावजूद अपने जीवन में संतुलन स्थापित नहीं कर पाता। व्यक्तिगत संबंधों और सामाजिक प्रतिष्ठा के बीच उत्पन्न द्वंद्व उसके व्यक्तित्व को लगातार प्रभावित करता है। मल्लिका के साथ उसका संबंध इस बात को स्पष्ट करता है कि जीवन में सफलता और उपलब्धि के बावजूद मनुष्य के भीतर अधूरापन और असंतोष की भावना बनी रह सकती है। इसी प्रकार *लेहरों के राजहंस* में मनुष्य के भीतर उत्पन्न आध्यात्मिक और सांसारिक द्वंद्व को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। नाटक के पात्र अपने जीवन में किसी स्थिर सत्य की तलाश करते हुए दिखाई देते हैं, किंतु उन्हें निरंतर असमंजस और अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति आधुनिक जीवन की उस मानसिकता को दर्शाती है जिसमें मनुष्य परंपरागत मूल्यों और आधुनिक जीवन की नई परिस्थितियों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिक जीवन-बोध का यह स्वर केवल व्यक्तिगत अनुभव तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक परिवर्तनों से भी जुड़ा हुआ है। उनके पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक समाज में

व्यक्तिवाद, महत्वाकांक्षा और सामाजिक दबावों के कारण मानवीय संबंधों की प्रकृति बदलती जा रही है। इसी परिवर्तन के परिणामस्वरूप व्यक्ति के जीवन में मानसिक तनाव और असंतोष की स्थिति उत्पन्न होती है। इस प्रकार मोहन राकेश के नाटक आधुनिक जीवन की जटिलताओं और मानवीय अस्तित्व की समस्याओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उनके नाटकों में व्यक्त आधुनिक जीवन-बोध न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वह आधुनिक समाज की मानसिक और सामाजिक स्थितियों को समझने के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है।

4. मोहन राकेश के नाटकों में पारिवारिक विघटन का चित्रण

मोहन राकेश के नाटकों का एक महत्वपूर्ण आयाम पारिवारिक संबंधों में उत्पन्न विघटन और असंतुलन का चित्रण है। आधुनिक समाज में सामाजिक संरचना और जीवन-मूल्यों में आए परिवर्तनों के कारण पारिवारिक संबंधों की प्रकृति भी बदलने लगी। संयुक्त परिवार की पारंपरिक व्यवस्था धीरे-धीरे कमजोर होती गई और उसके स्थान पर ऐसे परिवारों का निर्माण हुआ जिनमें संबंधों की स्थिरता और सामंजस्य कमज़ोर पड़ने लगे। मोहन राकेश ने अपने नाटकों में इसी बदलते पारिवारिक यथार्थ को अत्यंत सूक्ष्मता और यथार्थपरकता के साथ प्रस्तुत किया है। विशेष रूप से *आधे-अधूरे* नाटक में पारिवारिक विघटन का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। यह नाटक एक मध्यवर्गीय परिवार की कहानी प्रस्तुत करता है, जिसमें पति-पत्नी के संबंधों में तनाव, आपसी असंतोष और संवादहीनता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। नाटक की नायिका सावित्री अपने जीवन में संतोष और स्थिरता की तलाश करती है, किंतु उसे अपने पारिवारिक जीवन में निरंतर असंतोष और विफलता का अनुभव होता है। सावित्री का यह अनुभव आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की उस विडंबना को व्यक्त करता है जिसमें व्यक्ति संबंधों के भीतर रहते हुए भी भावनात्मक संतुलन प्राप्त नहीं कर पाता। इस नाटक में परिवार के अन्य सदस्यों के चरित्र भी पारिवारिक विघटन की स्थिति को और स्पष्ट करते हैं। पति महेंद्रनाथ का चरित्र आत्मविश्वास की कमी और असफलता की भावना से ग्रस्त दिखाई देता है। बच्चों के साथ माता-पिता के संबंध भी तनावपूर्ण हैं और परिवार के भीतर संवाद और विश्वास का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस प्रकार पूरा परिवार एक ऐसी स्थिति का प्रतीक बन जाता है जिसमें संबंध केवल औपचारिक रूप से बने रहते हैं, किंतु उनके भीतर भावनात्मक निकटता समाप्त हो जाती है। मोहन राकेश ने इस पारिवारिक विघटन को केवल व्यक्तिगत समस्या के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है, बल्कि इसे आधुनिक सामाजिक परिस्थितियों से जोड़कर देखा है। आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक प्रतिस्पर्धा और बदलते जीवन-मूल्यों के कारण पारिवारिक संबंधों में जो तनाव उत्पन्न होता है, वही इस नाटक के पात्रों के जीवन में भी दिखाई देता है। इस प्रकार पारिवारिक विघटन आधुनिक जीवन की जटिलताओं का एक महत्वपूर्ण परिणाम बनकर सामने आता है। इस प्रकार मोहन राकेश के नाटकों में पारिवारिक संबंधों का चित्रण अत्यंत यथार्थपरक और संवेदनशील है। उनके नाटकों के पात्र यह दर्शाते हैं कि आधुनिक समाज में पारिवारिक संबंधों की स्थिरता लगातार चुनौती के दौर से गुजर रही है, और इसी प्रक्रिया में व्यक्ति के जीवन में असंतोष, अकेलापन और मानसिक संघर्ष की स्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

5. पात्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन की त्रासदी

मोहन राकेश के नाटकों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे अपने पात्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन की जटिलताओं और त्रासदियों को अभिव्यक्त करते हैं। उनके पात्र केवल कथानक को आगे बढ़ाने वाले साधन नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक समाज की मानसिक और सामाजिक स्थितियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन पात्रों के माध्यम से आधुनिक मनुष्य के भीतर उत्पन्न असंतोष, असुरक्षा और अस्तित्वगत संकट का चित्रण किया गया है। *आधे-अधूरे* नाटक के पात्र आधुनिक जीवन की त्रासदी को अत्यंत स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करते हैं। सावित्री का चरित्र एक ऐसी स्त्री का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने जीवन में स्थिरता और संतोष की तलाश में निरंतर संघर्ष करती है। वह अपने पति महेंद्रनाथ से असंतुष्ट है और अपने जीवन में एक ऐसे व्यक्ति की तलाश करती है जो उसे भावनात्मक और सामाजिक सुरक्षा प्रदान कर सके। किंतु उसकी यह खोज अंततः उसे और अधिक निराशा और असंतोष की स्थिति में पहुँचा देती है। इस प्रकार सावित्री का चरित्र आधुनिक जीवन की उस विडंबना को व्यक्त करता है जिसमें व्यक्ति पूर्णता की तलाश करते हुए भी अधूरापन अनुभव करता है। महेंद्रनाथ का चरित्र भी आधुनिक जीवन की त्रासदी का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी असफलताओं और आत्महीनता की भावना से ग्रस्त है। परिवार में उसकी भूमिका कमजोर और निष्क्रिय हो चुकी है, जिसके कारण वह अपने ही घर में असहाय और उपेक्षित दिखाई देता है। महेंद्रनाथ की यह स्थिति आधुनिक समाज में उस व्यक्ति की स्थिति को दर्शाती है जो सामाजिक और आर्थिक दबावों के कारण अपनी पहचान और आत्मविश्वास खो देता है। इसी प्रकार *आषाढ़ का एक दिन* में कालिदास का चरित्र भी आधुनिक जीवन की त्रासदी का एक अलग आयाम प्रस्तुत करता है। कालिदास अपनी प्रतिभा और

सफलता के बावजूद अपने व्यक्तिगत संबंधों में संतुलन स्थापित नहीं कर पाता। मल्लिका के साथ उसका संबंध यह दर्शाता है कि जीवन में उपलब्धियाँ और प्रतिष्ठा भी मनुष्य को पूर्ण संतोष नहीं दे सकतीं। इस प्रकार कालिदास का चरित्र आधुनिक जीवन के उस द्वंद्व को प्रकट करता है जिसमें व्यक्ति सफलता और व्यक्तिगत संबंधों के बीच संतुलन स्थापित करने में असफल रहता है। इस प्रकार मोहन राकेश के नाटकों के पात्र आधुनिक जीवन की जटिलताओं और त्रासदियों का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं। उनके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक समाज में व्यक्ति लगातार मानसिक और सामाजिक संघर्षों का सामना कर रहा है। यही संघर्ष और असंतोष उनके नाटकों को गहन मानवीय संवेदना और यथार्थ से जोड़ते हैं।

6. संवादों और नाटकीय संरचना में आधुनिकता की अभिव्यक्ति

मोहन राकेश के नाटकों की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनकी संवाद-शैली और नाटकीय संरचना है, जिसके माध्यम से आधुनिक जीवन की जटिलताओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उनके नाटकों में संवाद केवल कथानक को आगे बढ़ाने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे पात्रों की मानसिक स्थिति, उनके संबंधों की जटिलता और आधुनिक जीवन की विडंबनाओं को व्यक्त करने का सशक्त साधन बन जाते हैं। राकेश की भाषा सहज, संक्षिप्त और यथार्थपरक है, जो आधुनिक जीवन की संवेदनाओं को स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त करती है। विशेष रूप से *आधे-अधूरे* में संवादों की शैली अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस नाटक में पात्रों के बीच होने वाली बातचीत से उनके संबंधों में मौजूद तनाव और असंतोष स्पष्ट रूप से सामने आता है। संवादों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि परिवार के सदस्य एक-दूसरे के साथ रहते हुए भी भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से दूर हो चुके हैं। इस प्रकार संवादों के भीतर ही पारिवारिक विघटन और मानसिक संघर्ष की स्थिति व्यक्त होती है।

मोहन राकेश की नाटकीय संरचना भी आधुनिकता की अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनके नाटकों में पारंपरिक नाट्य संरचना की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक स्थितियों और आंतरिक द्वंद्व को अधिक महत्व दिया गया है। घटनाओं की अपेक्षा पात्रों के अनुभव और भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ अधिक महत्वपूर्ण हो जाती हैं। यही कारण है कि उनके नाटक आधुनिक जीवन के मानसिक और सामाजिक यथार्थ को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त उनके नाटकों में प्रतीकात्मकता और संकेतात्मकता का भी उपयोग मिलता है। *आधे-अधूरे* में एक ही अभिनेता द्वारा विभिन्न पुरुष पात्रों की भूमिका निभाना इस बात का प्रतीक है कि सावित्री जिन पुरुषों में पूर्णता की तलाश करती है, वे सभी किसी न किसी रूप में अधूरे ही हैं। यह संरचनात्मक प्रयोग आधुनिक जीवन की उस स्थिति को व्यक्त करता है जिसमें व्यक्ति पूर्णता की खोज में निरंतर भटकता रहता है। इस प्रकार मोहन राकेश के नाटकों में संवाद और नाटकीय संरचना आधुनिक जीवन-बोध को व्यक्त करने के महत्वपूर्ण साधन बन जाते हैं। उनकी भाषा, संरचना और नाटकीय तकनीकें आधुनिक जीवन की जटिलताओं और मानवीय संबंधों की विडंबनाओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

7. समकालीन संदर्भ और आलोचनात्मक दृष्टि

मोहन राकेश के नाटक केवल अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण नहीं करते, बल्कि वे आधुनिक समाज की व्यापक समस्याओं और मानवीय अनुभवों को भी अभिव्यक्त करते हैं। इसी कारण उनके नाटकों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। आधुनिक समाज में व्यक्तिवाद, प्रतिस्पर्धा और बदलते सामाजिक मूल्यों के कारण पारिवारिक संबंधों में जो तनाव और असंतुलन उत्पन्न हुआ है, वह स्थिति आज भी उतनी ही स्पष्ट दिखाई देती है जितनी उनके नाटकों के समय में थी। विशेष रूप से *आधे-अधूरे* का कथानक समकालीन समाज के मध्यवर्गीय परिवारों की स्थिति को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस नाटक में चित्रित पारिवारिक संबंधों की टूटन, पति-पत्नी के बीच संवादहीनता और पीढ़ियों के बीच दूरी आज के सामाजिक परिवेश में भी देखी जा सकती है। इस दृष्टि से यह नाटक आधुनिक जीवन की एक स्थायी समस्या की ओर संकेत करता है। साहित्यिक आलोचकों ने भी मोहन राकेश के नाटकों की इस विशेषता को रेखांकित किया है। हिंदी साहित्य के अनेक विद्वानों का मत है कि मोहन राकेश ने हिंदी नाटक को आधुनिक संवेदनशीलता और मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान की। उनके नाटकों में प्रस्तुत पात्र आदर्शवादी नहीं हैं, बल्कि वे अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित वास्तविक मनुष्य हैं। यही कारण है कि उनके नाटक आधुनिक जीवन की जटिलताओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं।आलोचकों के अनुसार मोहन राकेश के नाटकों का महत्व इस तथ्य में भी निहित है कि उन्होंने नाटक को केवल बाहरी घटनाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि मानवीय संबंधों और मानसिक संघर्षों की गहरी पड़ताल की। उनके नाटकों में आधुनिक मनुष्य की असुरक्षा, अकेलापन और असंतोष की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह स्थिति आधुनिक जीवन के अस्तित्वगत संकट की ओर संकेत करती है। इस प्रकार समकालीन संदर्भ में मोहन राकेश के नाटकों का अध्ययन यह

स्पष्ट करता है कि उनके नाटक केवल एक विशेष ऐतिहासिक काल की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक समाज की उन समस्याओं को भी उजागर करते हैं जो आज भी मानव जीवन को प्रभावित कर रही हैं। यही कारण है कि उनका नाट्य साहित्य हिंदी नाटक के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक माना जाता है।

7. मोहन राकेश के प्रमुख नाटकों में आधुनिक जीवन-बोध की विविध अभिव्यक्तियाँ

मोहन राकेश के नाट्य साहित्य की विशेषता यह है कि उन्होंने आधुनिक जीवन की समस्याओं को केवल एक ही प्रकार के अनुभव तक सीमित नहीं रखा। उनके विभिन्न नाटकों में आधुनिक जीवन-बोध अलग-अलग रूपों में अभिव्यक्त होता है। *आषाढ़ का एक दिन*, *लेहरों के राजहंस* और *आधे-अधूरे* तीनों नाटक आधुनिक मनुष्य की मानसिक स्थिति और संबंधों की जटिलताओं को भिन्न-भिन्न संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं। *आषाढ़ का एक दिन* में रचनात्मक व्यक्तित्व और सामाजिक परिस्थितियों के बीच उत्पन्न द्वंद्व को प्रमुख रूप से चित्रित किया गया है। कालिदास का चरित्र यह दर्शाता है कि प्रतिभा और महत्वाकांक्षा के बीच संतुलन स्थापित करना आधुनिक जीवन की एक बड़ी समस्या है। कालिदास और मल्लिका के संबंधों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत संबंधों के बीच संघर्ष किस प्रकार मनुष्य के जीवन को प्रभावित करता है। यहाँ आधुनिक जीवन-बोध का स्वर रचनात्मक व्यक्ति के अकेलेपन और उसके निर्णयों के परिणामस्वरूप उत्पन्न भावनात्मक विघटन में दिखाई देता है। *लेहरों के राजहंस* में मोहन राकेश ने जीवन के आध्यात्मिक और सांसारिक आयामों के बीच उत्पन्न द्वंद्व को प्रस्तुत किया है। इस नाटक का केंद्र बिंदु यह प्रश्न है कि मनुष्य जीवन में किस प्रकार के मूल्य और लक्ष्य को स्वीकार करे। नाटक के पात्र अपने जीवन में संतुलन की खोज करते हुए दिखाई देते हैं, किंतु उनकी यह खोज उन्हें निरंतर असमंजस और अनिश्चितता की स्थिति में ले जाती है। इस प्रकार यह नाटक आधुनिक मनुष्य की उस मानसिक स्थिति को अभिव्यक्त करता है जिसमें व्यक्ति परंपरागत मूल्यों और आधुनिक जीवन की नई परिस्थितियों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

आधे-अधूरे में आधुनिक मध्यवर्गीय परिवार की विघटित संरचना और संबंधों की जटिलता को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यहाँ आधुनिक जीवन-बोध का स्वर पारिवारिक संबंधों में उत्पन्न असंतोष, संवादहीनता और अधूरेपन की भावना में दिखाई देता है। इस नाटक के पात्र अपने जीवन में पूर्णता की तलाश करते हैं, किंतु उन्हें बार-बार यह अनुभव होता है कि उनके संबंध और जीवन दोनों किसी न किसी रूप में अधूरे हैं। इस प्रकार मोहन राकेश के तीनों प्रमुख नाटक आधुनिक जीवन के विभिन्न आयामों को उजागर करते हैं। *आषाढ़ का एक दिन* रचनात्मक व्यक्तित्व के संघर्ष को, *लेहरों के राजहंस* अस्तित्वगत द्वंद्व को और *आधे-अधूरे* पारिवारिक विघटन को केंद्र में रखकर आधुनिक जीवन-बोध की जटिलताओं को सामने लाते हैं। यही कारण है कि मोहन राकेश का नाट्य साहित्य हिंदी नाटक में आधुनिक संवेदनशीलता की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति माना जाता है।

8. निष्कर्ष

मोहन राकेश के नाटकों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने हिंदी नाटक को आधुनिक संवेदनशीलता और यथार्थपरक दृष्टि प्रदान की। उनके नाटकों में आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मानवीय संबंधों की विडंबनाओं और पारिवारिक संरचना में उत्पन्न असंतुलन का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने नाट्य साहित्य के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया कि आधुनिक समाज में व्यक्ति के जीवन पर सामाजिक परिवर्तन, व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ और आर्थिक दबाव किस प्रकार प्रभाव डालते हैं। *आषाढ़ का एक दिन*, *लेहरों के राजहंस* और *आधे-अधूरे* जैसे नाटकों में आधुनिक जीवन-बोध के विभिन्न आयाम दिखाई देते हैं। इन नाटकों के पात्र अपने जीवन में संतुलन और पूर्णता की तलाश करते हुए दिखाई देते हैं, किंतु परिस्थितियों, सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत सीमाओं के कारण वे निरंतर मानसिक संघर्ष और असंतोष का अनुभव करते हैं। यही स्थिति आधुनिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता बन जाती है।

मोहन राकेश के नाटकों में पारिवारिक विघटन का चित्रण भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके नाटकों में पारिवारिक संबंधों के भीतर उत्पन्न संवादहीनता, असंतोष और दूरी आधुनिक समाज की वास्तविकता को प्रकट करती है। यह विघटन केवल व्यक्तिगत संबंधों की समस्या नहीं है, बल्कि यह आधुनिक सामाजिक संरचना और बदलते जीवन-मूल्यों का परिणाम भी है। इसके साथ ही मोहन राकेश ने अपने नाटकों में मानवीय संबंधों की जटिलता और व्यक्ति के आंतरिक द्वंद्व को अत्यंत सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है। उनके पात्र आदर्शवादी नहीं हैं, बल्कि वे अपने समय की परिस्थितियों से प्रभावित वास्तविक मनुष्य हैं, जो जीवन में संतुलन और अर्थ की खोज में निरंतर संघर्ष करते रहते हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मोहन राकेश का नाट्य साहित्य आधुनिक हिंदी नाटक के विकास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव का प्रतिनिधित्व करता है। उनके नाटकों में प्रस्तुत आधुनिक जीवन-बोध और पारिवारिक विघटन की समस्याएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके समय में थीं। इसी कारण उनका नाट्य साहित्य हिंदी साहित्य में आधुनिक संवेदना और यथार्थ की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है।

संदर्भ सूची

- राकेश, मोहन. *आषाढ़ का एक दिन.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018.
- राकेश, मोहन. *आधे-अधूरे.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2019.
- राकेश, मोहन. *लेहरों के राजहंस.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2017.
- राकेश, मोहन. *मोहन राकेश रचनावली* (खंड–1). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016.
- शुक्ल, रामचंद्र. *हिंदी साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2015.
- द्विवेदी, हजारी प्रसाद. *हिंदी साहित्य की भूमिका.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2012.
- शर्मा, रामविलास. *आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016.
- सिंह, नामवर. *इतिहास और आलोचना.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018.
- सिंह, नामवर. *कविता के नए प्रतिमान.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018.
- त्रिपाठी, विश्वनाथ. *हिंदी आलोचना का विकास.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2019.
- चतुर्वेदी, रामस्वरूप. *हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2014.
- मिश्र, विद्यानिवास. *भारतीय संस्कृति और साहित्य.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2016.
- अग्रवाल, पुरुषोत्तम. *साहित्य और समाज.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2018.
- श्रीवास्तव, हरीशचंद्र. *आधुनिक हिंदी नाटक का विकास.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2020.
- यादव, सुधीर. *हिंदी नाटक और सामाजिक यथार्थ.* नई दिल्ली: अयन प्रकाशन, 2021.
- मिश्रा, अजय कुमार. *आधुनिक हिंदी नाटक का स्वरूप.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2018.
- पांडेय, रामकुमार. *मोहन राकेश का नाट्य साहित्य.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2019.
- वर्मा, रामकुमार. *हिंदी नाटक का इतिहास.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2016.
- सिंह, केदारनाथ. *आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2015.
- गुप्ता, रमेशचंद्र. *हिंदी नाटक और आधुनिकता.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2019.
- जोशी, सुधीर. *हिंदी नाटक में सामाजिक परिवर्तन.* नई दिल्ली: अयन प्रकाशन, 2021.
- शर्मा, महेशचंद्र. *आधुनिक हिंदी नाटक का आलोचनात्मक अध्ययन.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2022.
- त्रिपाठी, रामस्वरूप. *आधुनिक हिंदी नाट्य साहित्य.* वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन, 2017.
- श्रीवास्तव, हरिनारायण. *हिंदी नाटक और समकालीन समाज.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2020.
- सिंह, अजय कुमार. *हिंदी नाटक और आधुनिक जीवन-बोध.* नई दिल्ली: अयन प्रकाशन, 2022.

- वर्मा, लक्ष्मीनारायण. *हिंदी नाटक और रंगमंच.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2018.
- भारद्वाज, हरिशंकर. *आधुनिक हिंदी नाटक में सामाजिक यथार्थ.* नई दिल्ली: अयन प्रकाशन, 2021.